जुड़ाव

पारस अरोड़ा

धरती प्रकाशन

प्रकाशक धरती प्रकाशन, गंगाशहर बीकानेर-334001 / मुद्रक एस० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 / संस्करण पैलो, 1984 / मोल पच्चीस रुपिया मात्र।

JUDAV (POEMS) PARAS ARORA Price 25 /-

विगत

'झळ' रै ओळै-दोळै

जुड़ाव

आगै ओ पसराव

की नैनी कवितावां

'झळ' रै ओळै-दोळै

मून तूटयो
चोरी
वधापो
बरस-जातरा
इतिहास-पथ

मून तूटचौ

आधिया अर बतूळिया री
बारबार थप्पडा खाय'र ई मून
अेक सिलाखड ।
आपरी सपूरण सगती सू
आपरा दोनू हाथा नै
सिलाखड माथै पछाटती देही ।
'खट्ट' री आवाज समचै
देह सवध तोडती
पुणचा री हाडकिया ।
जगै छोड
गळै कानी खिचतो-सो काळजौ ।
कोई अेक पडस्प टाक'र
पिर म्हियोडी आख्या ।

आख्या मीचली आखौ जगळ
पतझड ज्यू खिरगा सगळा कान
रोसणिया
ओढली अधारै री सीरखा
मुलक री मुळक धायगी तेड,
विणी-विणी वान सारू
मदेई-मदेई हत्ती वडी भामा
ओछी पड जावै
अठी भी भाखर, उठी था गाई

मारग बिच्चै पसरचौ औ सिलाखड
सिलाखड माथै आ देही
वधारघोडौ नाळै र निजर आवै।
जठै ताई जावै दीठ—अेक सून
जठै ताई सूतौ सून—अेक मून
पछै कोई अेक
अेक लारै अेक व्हे भेळा
समझ जावै दीठ वौ दीठाव।

भरमणा री कैद सू
छूटगा वै लोग
देवत रौ आसुरी रूप
आयगौ सामी
कालै जिण भाटै नै झुकता सीस
उण माथै
छेणी री टकार सुणीजै आज।

गिटक रैया झुड-झुड सून
तूट रैयो खड-खड मून।

चोरी

खून सींचिया फूटी कूंपळ
परसेवो पी बूटो फळियो
म्हैं जाण्यो—आ म्हारी मैणत
फूला फळा मजूरी मिळसी।

आ कद जाणी—
तन विसरामा थपकी देता
मन नींदड़ली पोथी पढता
रात आगणै
अंधारै री लगा निसरणी
चोर चादणो यूं वर दैला!

निकळूला जद मोधण
म्हारा रगत-पुसप नै
पळ-रस वदळ्या
परसेवा नै
तद पांघड़िया
चिपरपोडी मिळसी
रगत पुसप री
मूगोडा छूनरका मिळसी
रस रै पळ रा।

कद जाणी ही—
रगत-पुसप री रगत
जमारो यूं चूसैला,
परसेवो म्हारो यूं चोरी व्है जासी।

वधापौ

जिण देही पगा तळै
पल-पल जमी-कप झेल्या,
चालो बिना हुकमनामा
जिंदगानी
जीवण री जातरा।

देख्यौ
दिनौ-दिन
चौफेर व्हेतौ बधापौ।

मारग मे
चौरस्ता बैठा चौकिया चौकीदार
देखता किण कनै मुडण रौ अधिकार
तद
मजबूर वै पग
गळिया रा जाल मे गमगा।

चौकणी—चवडी—चमकती
गरजती
सडकां रै नगर मे
अधारी-गिदती, देहिया सिडावती,
ठोकरा मारती गळिया
वा देही
भटक्योडी, थाकोड़ी

जगै-जगै पाटा बाध्योडी
पडी ही अेक जगै
लेवती विसराम !

नी जाणै अणजाण्या सुभचिंतक
किण दिसा सू आय घेरो घाल
उणरी देही रै उपचार सारू
अस्पताळी जाच रो परचौ बणायौ
जगळा रै बीच 'सेनिटोरियम' मे
लाय'र भरती कियौ
खरचौ लगायौ।

मन बिलमावण नै
प्राकरतिक छविया ही
मूछदार चपडसी
स्वागत नै हाजिर हा।
देख
वारा होठा री मुळक'र
आख्या री चमक
चमचेड
काळजो पकड
ऊधी लटकगी ही।

धारियोडो अधिकार
आखै जगळ माथै
सायत तोडती
उण इमारत रै माय
पिलगा पसवाडा फेरता
हाड-पिंजर देख
पग लारै सिरकगा।

कापता-सा सबद फूट्या—
"औ काई ? औ काई डाक्टर,

कीकर व्हियौ औ ?
जिण व्यवस्था तूट
पूगी अठै म्हारी देह
उण व्यवस्था रौ
अठै औ प्राण-लेवा रूप।
किण विध करौला उपचार म्हारौ
नी समझ आवै।"

पण
हेताळुवा रौ हेत
अधिकारिया रा अधिकार
डाक्टरी सादगी री थ्यावस
सगळा मिळ देवता
जीवतै रैवण रै अधिकार रौ हवालौ
काढता, नी जाणै किसी अदावती
बणता
म्हारी देही रै उपचार रा हिमायती।

बारिया मे चितराम ज्यू टंगियोडा
प्रकरती रा दीठाव
नी बाधता मन
तन अस्पताळ री ख्याती वधावता।

सफेदी मे सिनान कियोडी नरसा
कपडा मे नी
पटकती लिलाड माथै सळ
अर पीडिया माथै चिप्योडी
रोगिया री निजरा
ऐडिया री अवाज समचै झटकती
ही लागोडी
गोळिया अर सुया रा
इलाज पूरा करण मे
नित रौ नेम सू वधियौ
वारौ मसीनी उपचार

दिनोदिन
हाडका री थोथ मे व्हेतौ वधापौ
काळूटौ पडतौ-पडतौ ज्यू आकास
सूरता अर मूरता पडछावळी वणती
देख/चामडे चढतौ हळकौ हळदिया रंग
भोगनौ भवाली खायगौ।

धीरे-धीरे धुपती चेतना
मावौमाय फुकीजती देही
आख्या सामी लोप व्हेती उजास किरणा
वद व्हेता सुणीजणा
स्वरा रा भणकारा
बिना दवा-दारू
अभूझणिया वण आवता
बेहोसी रा दौरा
उपचार अर उपचारका री
करायदी ओळख।
ऊठण लागा खिलाफत रा पग
कोई उळझियौ वाड मे
कोई खायी गोळी, कोई खाई मार
धीरे-धीरे समझगा सगळा
वुण'र क्यू वारौ कर रैया उपचार
व्हेण लागौ अेकठौ
उपचार सू इनकार।

हारगा इण रोग सामी डाक्टर
मानता आ वात वानै ई
रोगी वणण रौ डर
आखिया रै अधारै नीचै रुळता टावर
मौत रै मूडा आगै बिखरता घर अर
साकळा स्वीकारतौ डाक्टर रौ डर।

वधापौ व्है रैयौ है

नरसा अर डाक्टरा री
धडाबधी मे
पौरेदारा रो सञ्या मे
घेराबदी मे
वध रंयो निदाळुवा रो जागरण
अरण-जाग/जाग अर रण
चौकीदार नै घायल कर
न्हाटता मरीज बूट हेटै
किचरीजगो
फुकारतै नाग रो फण।
गाव मे हाको अर सैर मे छापो
वधापो ! बधापो
फेर अेक वधापो

बरस-जातरा

गये बरस लागा
तीन सौ पंसठ झटका
जमी-कम्प रा अंडा
    हरेक झटकं सू
    इछा री मीनारा मे
    खिंचती गई तेडा।

बरस समाप्ती साथं केई
बिखरण लागी
खिरण लागगी पान ज्यू
सूख-सूख आसावा।

म्है
ऊझड बस्ती रं सून्याड मे ऊभौ
नुवं बरस रं स्वागत सारू
नुवी मीनारा खडी कर रयौ हू
    जूनी मीनारा री
    साळ-सभाळ   टूट-भाग
    म्हारं नावं चढगी है।

लारला बरसा ज्यू औ ई
म्हारं साथं भटकंला
खेलंला, देखंला

नित बदळतौ
जोड-तोड रौ खेल—
हळदिया देहिया री
ऊडी आख्या माय चिलकतै
पाणी माँय तूटती
डूबती सूरज री किरणा'र
किरणा रै टूटण सू उपजती
पाणी मायली लाय।
'हाय' कैवण रौ रिवाज अवै नी रैयौ
छोरा रौ
दडिया रमण रौ सोख गयौ
हाथा मे लिया फिरै वारुदी गोळा
वणा-वणा टोळा
बरस री देह माथै पडैला इज घाव

देखणी पडैला
विग्यान रै जुग मे
अग्यान री अग भग करती धार
'कृपि प्रधान देश' मे
बरसो-वरस
थळियै काळ री मार।

फाटोडा चीथरा मे
उघडतै डील नै
आवती लाज
डील उघाडण सारू
चालनी फैसण री खाज।

वरस रा वारा महीनां माथै
देसी कैलेंडर मे दियोडा
वारा विदेशी चितराम
वरस माथै चेठचा व्है डाम।

सरदी में—
सूखोडी अमचूर ज्यू
अकड़ीज्योडी
पिकासो रै चितराम नै
मूरत करती
नगर-पालिका री वाट उडीकती
किणी नागरिक री ठडी देही।
गरमी मे—
भट्टी ज्यू सिळगती सडक माथै
लोह ज्यूं तापयोडी देही माथै
लूवा रा घणा नै झेलतौ मानखो
आभै मे गाळ वगावतौ
जिदगानी री ठेला-गाडी ठेलै।

बरसात मे—
झरते टापरियै टावर नै
थपक्या देय सुवाणती लुगावडी नै
ठपका देय'र रुवाणतौ
अर खुद नै सुवाणतौ मरद
लाल तिकूण रा तीनू खूणा तोडै
बरस भर—
फूल गाठा खिलै अर विखर जावै
तणियोडौ रेवै काटा वाळौ थोर।
बगत रा पडता जाय निसाण।
मजूर रगत वेच करै मजूरी
खाडौ खाली रौ खाली
रातौ रग चिलक रुपाळी
भरती जाय तिजोरी
धुकधुकियौ हडताळ करै
नी रुकै बगत री फेरी।

जन, गण अर मन री अवाज सू
ओळखीजै

गणतन्न अर स्वाधीनता दिवस
सहीदा रा टोला
क्य् होमिया प्राण
भूलगा अवस ।
राजनीती रै हाथा
व्है़तो रै देसभगती रो खून
भोळी गाडरा रो
वगतो-वगत उतरतो रै ऊन
दीवाली माथै चिजळो फैल
होली—रग रो नी, पाणी रो खेल ।

घाव माथै घाव लागै
पीड माथै पीड ऊगै
घामल वरस गुडक्तो-पडतो
वडै दिना गिरजाघर पूगै
ईसू री मूरती सामो ऊभ
गिणै उणरा घाव
अर खुद रा गिणोजै कोनो ।
गयं वगत सू पाछो
फिरीजै कोनी ।
ओळू रै ओळै-दोळै देय चकारा
बूढो वरस वावो
चढ जावै इतिहास पगोथ्या
अर म्है आय जावू पाछो
फेर अेक नवै वरस रै स्वागत सारु
आसावा अर इछावा मीनार बणातो
सभावनावा आवतो उठै
जठै
ढिगलो वणी तेड खायोडो
इछा रो मीनारा म्हारी
आसावा रा सूखा पान
जठै री टूट भाग
अर साळ-सभाळ/म्हारै नावै लिखियोडो है।

इतिहास-पख

लो,
अेक पूरो दळ रो दळ
सामी आयगो है
इतिहास-पख।

पलोपल, पगोपग
चौफेर उजागर व्हेतो
मौत मुडै चढियोडो
गळियां अर मकाना सू निकळ
मोरचो लेतो
आयगो चौरावै घुरकावतो
इतिहास-पख ओ साव सामोसाम।

सूखोडी देहिया मे
लेवती पसराव
जडा
बदळाव री,
अर समरथन रूप आ ऊचा व्हियोडा
हाथा री खुली हथेळिया
बद व्हेय मुट्ठी मे बदळीजण लागगो
रगत रग आख्या मे उकळीजण लागगो
कसोटिया
चढगी है बद आदमी री

पण पीड
किणी नपीणें नपीजी कोनी
चोट करण सारू
सधियोडा हाथा में
देख घण उचियोडा।
भाटा नैं भगीजण रौ भैं खायगौ है
लौ अेक पूरौ दळ रौ दळ
सामी आयगौ है—इतिहास-पख !

जूनी भीता गढा-मढा री
लेव खेरती
जगैं छोडती जाय धमाकां समचैं
खड-खड पाखड पियोडी
नगर-सेठ री नुवी हवेली
नीवां झटका खाय।

सद उतरता गोदामा गिदाय रैयो है
काळ पडणा री वाट जोवतौ
काळ पटकतो
अर सेठा रौ नफौ बधातौ
धांन।

चकारा काट रैयी है
चिगदीज्योडी भूख
के जाणें प्रेत कथा रौ भूत
आपरैं भख सारू भटकैं भिमरयोडौ
दांत अर डाढ री भीचण
सबूतरीजतैं चैंरे माथैं
ताण दैवैं हाडक
कनपडी री नस फरूकती भुजा साथैं
खावैं उछाळा
भेटी मारण सारू
अस्टपौर त्यार कोई भोडक

क्यूं के   वौ देखौ हत्यारौ हाथ
फेर उण कँवळी जमी माथै
घावा रौ दरखत उगायगौ।
अबै उणरी हरकता रा पडुत्तर देवण नै
एक पूरौ दळ सामी आयगौ
—इतिहास-पख !

आपरौ आकास   आपरी दिसावा धारतौ
पगा हेटली जमी माथै
खुद रै अधिकार री घोसणा करतौ
थोपीज्योडा आरोपा री नींव खोदतौ
खुद रौ एक सूरज मँडळ ऊँचाया
वौ केया रा प्रभा-मँडळ तोडतौ
आयगौ है
जवाना रौ जूथ—औ इतिहास-पख !

इण पख री किणी पुडत
कोई इतिहास पुरस
उळझ्योडा नखतरा रा गणित नै सुलझावतौ
सभूलै वदळाव री रूपरेखा धारतौ
नी जाणै किण इकात   कठै बैठौ है
सामी है   नवजवानी झुड
एक टोळौ—इतिहास-पख !

जुड़ाव

अेक लम्बी कविता

जुड़ाव

सगळी आगळिया अेक सरीखी नी व्है
    —इत्ती कैवण सू पूरी नी व्है बात
    जठै ताई नी कैवा
के सगळी आगलिया अँगूठै समेत
हथेळी सू जुड़घोड़ी व्हिया करै !

आदमी
खुद री ओळख खुद व्हिया करै
आपरा तमाम
    निबळा-सबळा अँगा-प्रत्यँगा समेत
गिणीजै जिणरी अेकोअेक हरकत
अर गवाही नै त्यार
    जबान मायँ आवणियौ
    अरथ री तमाम गुजाइशा री बोझ उँचाया
    अेकोअेक सबद
आदमी री ओळख सूं जुड़घोड़ा व्हिया करै
आदमी खुद री ओळख खुद दिया करै।

आदमी री
    अेक घर व्हिया करै
अेक कमरौ
    जिणरौ वौ किरायौ दिया करै
की लोग
    जिका नै वौ परवार कैया करै।

परवार
पीढी-दर-पीढी पळतौ
वंस रो अंस
अेक दूजै रै आधार
रुई री पूणी ज्यू
तकळी माथै कतीजतौ
सूत रो धागौ बण
कोया मे लिपटीजतौ रैवै
कतीजतै सूत रौ ताणौ
केई वार
वट खा'यर
कमजोर जगै सू तूट जाया करै
पण पूणी
पाछी उण तूट सू जुड'र
चालू राखिया करै कतई रौ काम

कोई पूणी कोई तकळी हाथ कोई
मैणत अर प्रेम रै मेळ रा
आपस मे लिपटचोडा
कित्ता प्यारा लागै
अे घेघट रँग।

परवार
के जिणनै ढकण सारू
हमेस कपडौ ओछो पडजावै
वो उणनै ढकै अर वौ उणनै
अर इण खीच-ताण मे
कदेई डावौ तौ केदेई जीवणौ
अँग उघड जावै।

दौडता sss दौडता sss
जिण सारू हरेक रस्तौ छोटौ पड जावै
पण आदमी दौडणौ कोनी छौडे

डावें अर डावें वो दौडती जावें
तूटोडा, छूटोडा
रस्ते रा रिस्ता नें जौड़तो रेंया करें।

आदमी रो अेक चौखूणो घर व्हिया करें
अेक कमरो
जिणरो वो किरायो दिया करें।

कमरो
के जिणरी सफाई-पुताई
अर पलस्तर तकात
किरायेदार री जिम्मेवारी सू
जुडयोडा व्हिया करें।
अर जिणमें
खूणें-खूणें रो बेंटवाड कर
अेक परिवार रेंया करें।

अठीनें
इण ठाकुर जी रें आळे समेत
ओ खूणो मा-सा रो
जिणमें निवामें
तेंतीस करोड देवी देवता
(याद आवें बटवाट पछें भारत री जनसख्या)
जिकां री तस्वीरा
कूकू-केसर रा छाटा सू छिपगी है।
विना स्लोका री गीता री टीका
जिणरें हरेक अध्याय लारें जुड़ियोडो
महात्म्य री कथा रो पापी भूत
डोकरी नें पाप सू डराया करें
मिंदर सू पाछी आय
रसोई बणावती वहू रें खूणे में
निजर राखती
भळो कर आखती-पाखती रो बुढापो

मुगती सारू
गीता रौ अठारवौ अध्याय सुणाया करै।
नींद सू उठ'र उबासी खावतौ आदमी
की डरावणौ दीसै
ज्यू उगणीसवें अध्याय रै महातम्य रौ प्रेत
जिणसू डरप'र करोड़ू देवता।
इण आळै रै वारै
कदैई पग नी धरिया करै।
आळै सू अगरवत्ती
अर रसोई सू
छमकै री उठती सौरम
अेक-दूजी सें रम जाया करै
परसाद रा मखाणा
इण खूणै सू उण खूणै ताई
वट जाया करै।

अठीनै इण खूणै
दिन रा रसोई
अर रात रा बिछावणा लागै
गरम आगणै सोवै वडा-बूढा
टाबरा नै सवावती जगै सुवाणै
आळा-पछीत अर पाटकडी पसरयोडौ
डब्बा-डब्बी अर सीसिया भरियोडौ
औ घरवाळी रौ घर वाजै
जिणरी खूट रै समचै
उजागै तूट रा की रग
घेर लेवै आदमी नै लूट रा की ढग
जिका
चारू खूणा री भेळप सू छूट जाया करै
हा,
इण तेल-लूण-लकडी मे
केई वार आदमी

छकडी भूल
छकडौ वणा जाया करै,
पण घर रा गाढा रिस्ता जुडियोडौ
दौडतो रैया करो।

इण खूणै म भावी भारत
चौपियै भूगळो अर टिंकोरघै री अवाजा विचाळै
घोडी मे भाई नै हीडौ देवतौ
पाखती सू आवती फिल्मी गाणै री धुन माथै
भणाई री भूना सुधारतौ
आपरौ पाठ याद किया करै
कदेई पोथी मायला तौ कदेई पोथी वारळा
सवाळ
लगोलग उणनै ई उळझाया करै।
अर औ अठीनै—इण खूणै
पेटी-बिस्तर रै स्यारै बैठो
चार खूणा ओछन री हिसाब लगावतौ
ताकडी-तोला सभाळतौ
आदमी सगळी बाता तोलतौ रैवै।

खुद नै बचावतौ रैवै—
—अध्याय री समाप्ती सू पैली
बुजणआळी जोत मू
—तवै माथै न्हाख'र
भूलयोडी राटी सू
—भणाई री पोथी मारले
टाबर री उमर उलांगतै
सवाळ मू!
अंडा कमरा मे
अवस्था री उमर आगूच आया करै
टाबर
बगत मू पैलो

जवान बण तण जाया करै।
दौड़ताऽऽऽ···दौड़ताऽऽऽ ई
केई वार
गाडी अंडी जगै आय'र अड़ जाया करै
के छेली रोटी वटण सारू
पलेथण पाडोसण सू
उधार आया करै।
पण कमजोरी कठै नी व्है
कोई री निजरा तौ कोई रौ साथ
कोई रौ पग वारै कोई रौ हाथ
पण आदमी मे
आदमी सू जुड़णै री
गुण व्हिया करै
आगळी छोटी व्हौ के मोटी
हथेळी सू जुड्योडी व्हिया करै।

औ देखौ आडोसी-पाडोसी
टग व्है ज्यू जुड्योडौ
आदमी फोरा-पतळा झटका नी डिगै
टीपरी
अर वाटकी
अर बोतल री
औ उधार नी रुकै।
कित्ती अपणायत के भाया सू वत्ता
अेक तणी सूखता कपडा-लत्ता
भीता नै डाक-डाक
वाता री आव-जाव
रैवण नी दे छिपाव
सगळा ई जाणै के कुण कित्तौ नागौ
किण-किण नै कठै-कठै
रोग किस्यौ लागौ।
जाणै है आदमी

के हरेक बीमारी रौ
इलाज व्हिया करै
काम पड्या
जबान रौ उत्तर
कदैई-कदैई हाथ दिया करै
पण हाथ, लात अर बात माथै
बाबू राखणियौ इज मात दिया करै।
कमरै-दर-कमरै गूथीज्योड़ो
किरायेदारां री
बिजळी पाणी री चोटी
मकान मालिक री अेडी नीचै व्हिया करै
केई 'खम्मा-खम्मा' रा उचावणिया कैवै
'मकान मालिक
मालिक व्हिया करै।'
जदै इज तो
मकान मालिक रा मुन्ना बाबू
दडी-दल्ले रै खेल मे
कदैई 'आउट' नी व्हिया करै।
आदमी इत्तौ इज तौ कर सकै
के आपरा टाबरिया नै समझाय दै—
'बेटा, औ खेल यू नी
यू खेलीज्या करै,
बिना नियमा कोई खेल नी व्है
गरीब रौ अमीर सू
कदैई मेळ नी व्है।

इण सेठा री पोळ मे
कमरै सू कमरै री
जुड़योड़ी ओळ मे
केई घर वास करै
अर सेठाणी आपरौ 'पणौ' बतावण सारू
कदैई इण घर मे तो कदेई उण घर मे
जाड-फूट कर दिया करै।

आदमी जाणै
के अैंडी वगत मे
सगळा घर चुप क्यू रैया करै।
रोज रौ रोवणो है
परवा कुण किया करै अर पछै
सेठा रा कान लारै
सगळा मूडा भेळा व्हिया करै।
वो
रात भर सवार परवार नै
दिन अर साझ ससार नै दिया करै
परवार रा लोगा नै
इण माथै ई केई अंतराज व्हिया करै
आदमी रौ
घर सू वारै रैवणो अर
डोकरी रौ औ केवणो के
इण छोरा रौ
अेक पग वारै अर अेक माय रैया करै
वो डोकरी नै समझावै के
मा सा
पग वारै अर पग मायनै रौ
मतलव काई व्हिया करै।
घर वाळी रौ तळफळो के
थारी की ठा नी पडै
थै कद आवौ नै कद जावौ
कठै सू आवौ अर कठीनै जावौ ?
वो तरराय'र कंवै—
आवौ अर जावौ अर कद अर कठै
इत्ता सारा सवाल
अक साथै नी पूछीज्या करै।
टावरा री नाराजगी—
के खुद तो घूमता फिरौ पापा

म्हानैं क्यूं नी घुमावौ ?
बाप मुळक'र मनीमन कैवै
धीरज राखौ बेटा
बगत आया मिनख
आपौआप घूमण लाग जाया करै।
घर रौ खाडौ बूरण सारू
केई खाडा खोदणा पड जाया करै।

घर रै बारै आदमी
जगै-जगै बटचा करै
केई जगै कटचा करै
कठै ताई बचावतौ रैवै खुद नै
अदीठ धार री मार सू
अेक हाथ बचावण सारू
केई बार
दूजोडौ हाथ कटाया करै
अर सेवट
इण कटाव सू बचाव रौ उणनै
अेक इज रस्तौ निजर आया करै
के आदमी
आदमी सू
जुडतौ जाया करै।

आदमी
आदमी सू इज नी
घर-गळी-गवाड सू लैय'र
देस अर दुनिया ताई जुड जाया करै।

कमरै सू कमरौ जुड व्है मकान
मकान-दर-मकान जुड
बण जावै गळी
जुडाव री आ बात
गळी-गवाड सू लैय'र
व्है आगै सै'र टळी।

सगळी आगळिया अगूठै समेत
हथेळी सू जुडयोडी व्हिया करै ।
सगळी गळिया आगै जाय'र वद नी व्है
घणकरी अेक-दूजी सू मिळ'र
अेक रस्तो वण जाया करै
पण केई वार जाणीतो रस्तो
वण अजाण
सामी तण जाया करै ।
घर सू गळी मे आवता ई
आदमी
पक्को नागरिक वण जावै
गळी रा हाळात माथै
गाळिया री गैस का ढब्बू फुलावै
पण जद 'खड्ड' री आवाज समचै
सीग ताण्या नथू णा फूफाड करतो
सोनजी रो समझणो साड
सामी आवतो दीसै
तद निकळ जावै हवा सगळी
बोलती रै लगा ढकणी
झुका माथो
चौक कानी सिरक जावै ।

सुगन लेय'र वारै निकळ्या पछै ई उणनै
आगै मिन्नी अर लारै छीक रो डर रैया करै
पण हरेक अपसुगन रो तोड
कोई न कोई टोटको व्हिया करै ।
गळी नाकै चौक मे
खाता री भीड मे
वो महनो भर मस्ताया करै
तिनखा रै दिन मस्ती रा माळी-पन्ना
खुदो-खुद उतर जाया करै
जिका सेठजी

उधार नै उभाण'र
रोकड नै पैलो निपटाया करै
उण दिन उणनै
जैरामजी री करता खुद बुलाया करै।
उधार रो सूरज
जित्तो वेगो चढै
उत्तो वेगो ढळै कोनी
उधार वा वेलडी
जिकी फळै तो है पण बळै कोनी।

मानी के वै लोग आगळी नी
सीधो पुणचो पकड वाहुडो झाल लिया करै
पण औ ई
इत्तो सोरो नी व्हिया करै
मैणत रै सचै ढळी
आटणिया हथेळिया
हिलाय सकै बत्तीसी री नीवा
वाहुडो झाळणिया हाथ ई जाणै
वे वारी सीवा
कठै ताई रैया करै।

हा, वो लोगा री आदत मे सुमार व्है
रस्तै निच्चै ऊभ'र
चिमकाऊ कारवाया करणी
सवदा नै चीगळिया चढाय
चालनै मिनख री चाल चुकावणी
आदमी री समझ धीरै-धीरै
मदारी री गळाफाड अवाजा री
सीवा सोध लिया करै।
इणनै ठाई नी पडै
अर इणरै नाव गू कर देवै आनी
अै माती रा जागव

औ सोधतौ रैवै अखबार मे
साती रा हाथ अर काती रा पग।
मेळा मू लैय'र जेळा ताई रौ भरणहार औ
औ इ क्लाब री खेती मे
जिन्दाबाद री खाद
अबै इणनै नासमझ अर भोळौ कैवणौ
आख-कान आळै नै
आधौ अर बोळौ कैवणौ है
पण कई वार की लोग
देखती आख्या भचीड खाय जाया करै
जदै इज तो हरेक नारै रै लारै
भीड लाग जाया करै।
देख मौकौ बैठ नैडै
प्रेम सू बतळावता जे पूछला के सुणा थारी—
धीरै सीक घाटकी उचायनै औ
निजरा गडायनै देखैला यू थानै
ज्यू बिना किणी चीज माथै
मोटी रकम देवता
सेठजी परखता व्है सामला नै ज्यू,
पछै सावळ बैठ नै
चाय के बीडी री लाग देय यू बोलै—
'म्हारी !
मत पूछौ बाबू साव बात भारी है
आ थारै मू जुडचोडी है
बात खारी है।
म्हारौ बाप जमीन माथै बैठतौ
म्है स्टूल माथै बैठू
म्हारा बेटा नै कुडसी माथै बैठाऊला।
म्है म्हारै बगत रौ असोक कुमार हू
बाबू साव !
जिकौ जवानी सू बुढापै ताँई

आगै री आगै रैयौ
दोय कलाकार !
अेक नै जग मानै
दूजै नै लोग जाणै ई कोनी !

इत्तौ तौ आप ई जाणौ के
म्हाणा वळयोडा ममीनी पुरजा
म्हाणौ काम, विदेसा नै मात करै
अर म्है ???

छोडौ इण वात नै
अब्बै की परवा नी
टवार जवान ह्वै रैया है !

सुणौ वावू साव—
जिण वगत चीजा रा भाव सुणू
लागै कोई काळजौ फफेड दियौ
अर आप तौ देखौ इज हौ—
जिकी चीजा वजार मे नी ह्वै
वारा विग्यापन ह्विया करै
अर जिका रै कनै ह्वै
वै अेक रा दोय लिया करै
पण पछै ई कोई
असली ह्वैण री गारटी दिया करै ?

आपनै तौ ठा इज है—
कित्तौ माल
झूपडा सू वगला मैं जाया करै
ऊपर सू कित्तौ जैर अै
नीचै वरसाया करै
आपरै कनै नी ह्वैला इणरौ हिमाव
कै वात नी

आगै औ पसराव

अधारै रा घाव
मौसम री मार
तूटनो सम्मोहन
उडीक
बाकी हिसाब
कम्पोजिटर
लावौ दौ माचिस
बीज
क्यू इत्ता नाराज
आगनी-पाछनी रा रग
आग री ओळख

अंधारै रा घाव

काळो अर काळो
अधारो घण-काळो
हाड-हाड तोड रैयो
ओ काळो अजगरी कसाव।

अधारो/काळस में गमियोड़ी दीठ
अधारो/अतस में बळती आ लाय
अधारो/अेक देह वसती इज जाय
अधारो घण काळो।

अधारो/घर काळो
काळी है भींता सै
काळी छन, काळो है आगणो
तूटोड़ी वारी अर
अधतूटो दरवाजो जूझै
पवनमार धूजै
सोध रैयी अठी-उठी
दो आख्या डरप्योड़ी
कोई नी सूझै।

चळभळतै अतस में
पसरै को यू सवाल—
नेय उडी बारी नै

वं आध्या क्यू आयी ?
दरवाजौ तोड दियौ
वौ क्स्यौ वतूळियौ ?
करदै इण घर उजास
कठै तपै वौ सूरज ?
कैवण रौ घर/क्यू रै वण ज्यू कोनी
काई आ कारा है ?
क्यू कोनी वरतणै ज्यू
दीखत रा लोग अै
काई अै मिनखा सू न्यारा है ?
सूखोडी राटी वदळै
क्यू राखै वोटी री आस ?
मैणत रौ माल क्यू
पेट रै तोल मू छोटौ पड जावै ?
काई इत्ती लम्बी रात हुवै
पीढी-दर-पीढी यू पसरयोडी
हाड-पिंजर
तोड दै दम गुफावा रा जाळ मे
अर मारग नी लाधै
छोड दै आ कदरा
इण कारा नै छोड दै ।

घर बारै
दरवाजै ऊभोडै रू ख रौ
पवन पकड झझेड्यो डाळौ
जीवण-मिरतु विच्चै डोल रैयौ
चिडिया रौ माळौ ।
काळौ अधारौ घण-काळौ

अधारौ
लीर लीर लीतरा
अधारौ

पड़-पड़ झूपड़ी
अधारौ···
रिस्ता सैं किरच-किरच
अधारौ···
वात-वात किच-किच है, थू-थू है
अधारौ/घायल पग सोध रै'या रोसणी ।

अधारौ लदियोड़ौ
अधारै/अधारौ
पुडत-पुडत काळस री
ज्यू जमती जाय
रूप लै आकार
अर आकार
निराकार व्हैता जाय ।

धरा चढी कै तौ आकासा
कै आभौ पाताळ
लागै दिसा/दिसा मे घुसगी
जबरी आळ-जजाल ।

हाथ
हवा मे ऊठै-घूमै
पाछा आ जावै
उरभाणा पग
ठोकर डर री बेडिया
खुभै-चुभै काटा अर काकरा
रु ख हेटै देह खोलै
थकेलै री गाठडी
अर विसाई खावै
घडी आख लागै
घडी चैन आवै ।

झोका हा नींद रा
जाग रा झरोका हा
दीठ सैं अदीठ व्हैतो
अर अदीठ/दीठ।

पंपोळैं आगळिया देण अधेरैं री
काळैं मारग ऊग्या
चवता घाव
घाव माथैं घाव
चिगदग्यौ अधारौ म्हारौ गाव
नी रैयौ नाव।

जाणैं कुण राजा
किण राजा सू वैर ळियौ
वौ फौजी अधारौ
गावडियौ घेर लियौ
राजा सू राजा रौ
कैंडौ दुस्मीचारौ
देख्यौ हौ लाल रग
उण दिन वौ अधारौ।
काई वौ हड़प्पा
वौ मोअन-जोदरो
इण गत तौ नी मिळिया रेत मे ?

दर्‌रा सू—हिमगिर सू
दक्खणी पठारा लग
अेक देह पसरयोडी
मदवैं मद डूबोडी !
तीखा नख राजस री सगती रा
खुरच-खुरच खाज खिणैं
खुद री इज देही नैं

खुद लोही-झाण करैं
क्यू तूकँ अँडे मे
हमलावर अधारौ।
अधारौ·· अधारौ
पसरैं ज्यू जगळ मे
लागोडो लाय
सूतोडा सिंघ अठै सूता रैं जाय।

जद-जद वौ यू आयौ
माडतौ रगत पगल्या
टिमटिमता दिवला री
बुझती गी जोत
दरवाजै-दरवाजै सूती ही लोथ
तद-तद कू-कू पगल्या थरपीज्या
पासाणी देवत नैं सीस झुक्या
अजळिया
आकासा अरपित व्ही
हवन-कुड सगती रौ
आवाहन करता हा।

विन परख्या सगती नैं
सगती कुण कद मानी
सगती महार रूप परखीजै
सगती मद उपजावै/गैळ चढै
प्रगटै जद सगती हथियार रूप
सस्तर री धार
वार
मार करैं भारी
अर कुण झेलै वानै—
अै अधारी रस्ती री देहिया।

धारण कर सगती नै
वळो वणै अपरबळी
वळी चढै सगती नै
गढ-कोटा नीव पडी/वळी चढी
औ पडतौ खाडौ
वौ घर खाडौ कर दीनौ
'धं' करतौ टूटोडौ टापरियौ बैठगौ।
यू आयौ अधारौ
यू पडियौ घाव।

ऊग रैयौ
ऊग रैयौ
ऊगूणै सिंदूरी अगन-पुज ऊग रैयौ
पळक-पळक आकासा
सूरज-धज फरक रैयौ
दीठ नी जमै।
खड···खड· खड खडड···खडड
दौड रैयौ
दौड रैयौ
पूसणी तुर गा रय
चक-रेख भोम-खड नाप रैयौ
अस्वमेध पूजित है
अेक देह पसरीजै
रघुकुळ रौ महाकाव्य
जदुकुळ रौ महाभारत साखी है
कित्ता सबध अठै
जुद्ध-हवन होमीज्या
अेक देह थरपण नै
रगत-धार वार-वार
वार-वार
सगती नै अरपित व्हो

धरम-छेत्र/करम छेत्र मानीज्यो।

टूट र'यो अधारो, तिड़क र'यो अधारो
लीर-लीर अधारो, किरच-किरच अधारो
घायल कर
घायल है अधारो।'

मौसम री मार

सरदी रै सामियानै नीचै सुकड़ीजै
आखो नगर
सद खायोड़ी झूपड़िया मे
निदामी गाठड़िया
वधीजण लाग जाया करै
ठड री ठोकरा ठुकीजतो आदमी
कठै ताई करै
चाय अर ठर्रै स सेक
देख/छेक कपडा मे
पून मेख ठोक जाया करै
ठड रै पसराव सामी
रजाई अर लुगाई
ओछी पड जावै ।

मौसम को व्हो भलाई
धकाधूक आवै अर
टगड़ी मार जाया करै ।

बरसाता/वधजावै खतरो
चप्पल रै तूटण रो
मजो आवै/बजार नै
मौसमी वायरा नै लूटण रो
कपडा अर कादै निचाळै

थरपीजै/दागोल रिस्तो
भीज्योड़ो/भिजोयोडो
चीजा साथै पाणी
चढ जावै कार्ट अर
गरीब ग्राहक नै काटै ।

हवा री गरम हथेळिया
फेंकै रेत
अर सगळो बदन
रेत-रेत रेतिया व्है जावै
कपडा नीचै
पसरै चिपचिपाट
वेंवै/वासै पसीनो
बदन माथै कपड़ा
जूता मे पग अर
माय सू मन
बळण लाग जावै ।
आदमी
घणा दोरा भेळा करै
ठडक रा किरचा
विना पाणी/ पाणी-पाणी व्है जावै
मौसम है के
मावो-माय
तिरस री धार तीखावै ।

ज्यू-त्यू
मौसम री मार खावतो मिनख
आखती-पाखती ओट लेवतो
हाथ-उधारा हथियारा
मुकावलो मार जाया करै
मौसम/वार करतो आवै अर
हार खावतो जाया करै ।

तूटतौ सम्मोहन

इण सईकं रौ सबसू बडौ
करतब कैवू के इचरज
वौ
सगळा काम करं
चालतौ-फिरतौ दीसं
खुदरा हाडक/खुद इज पीसं
पण जाणं किण नींद में डूबोड़ौ
बरसा लग नी जागं !

बरसा लग ?
हा, हा ! बरसा लग नी जागं
सबदा रं जादू रौ
    सम्मोहन भारी है।

नी तर/आ कीकर व्है
न्यारा व्है जावं उणसू
उणरा दोनू हाथ'र
    उणनं ठा ई नी पडं
उणरा हाथ/उणसू इज लडं।

साचाणी, सबदा रौ सम्मोहन भारी है।

अजाण हाथा खुदियोडौ
    अदीठ खाई में पडियौ

खयाला, खबरा अर खरचा री
अबखाई सू घिरियौ
पडपडावतौ गरमी खावै
चाय र पाणी ज्यू उकळ
नेठाव र प्याल मे ढब्रीज
मूडे ताई री गरमास वण
रॅय जावै।

प्रचार री परवानौ लेय
फैसण री आट मे अटीज
जद कीमती कपडे री कचूमर काढे
तद उणनै ठा नी पडे के वौ
आपर परवार रा लोगा रा
हाडका र जगळ मे
कित्ती लाय उगावै।

सवकरा गलेफीज्योडा सौख
जैरीली आदता वण जावै।

सभ्यता री तालीम र नाव
सभ्य लोगा र वताया मुजव
इणनै
फिल्मा, पोस्टरा अर अखवारा मायली
'मॉडल गर्ल' कर खतरनाक इसारा
अर लगातार भरमाया कर
हरेक बगलौ अर हवेली
झूपडी नै लगौलग ललचाया कर।

खेत अर गोदाम विचाळै थरपीजै सुरग
समदर रौ पाणी लेय
बादळौ नदिया तरसावै
पाणी विकै
पाणी री कार्णी विकै

काणी री राणी विकै
बच्यो-खुच्यो पाणी
वेचणियै री आख मे मर जावै।

दुकान/आगै सू धौळी अर
लारै सू काळी
सिक्को/अठी खरो, उठी खोटो
वोट लेय'र चोट करतो नेता
नोट लेय'र खोट करतो वौपारी
सिकायता री पोट लिया
भटकै है गरीवदास।
बाप समझै अर वेटो समझावै—
वापू, अै लोग अगूठो लगवाय
अगूठो बतावै
अवै आनै हाथ बतावणो पडैला
लाठी चलो कै गोळी
थे घणाई लड लिया
अवै थारो बेटो लडैला।

अरथा रै आगणियै
सबदा रो सम्मोहन तूटण लागगो
वेटै रै जगाया वाप ई जागगो
समझ मे आयगो
सम्मोहन सार
फक्त ना देवै जित्ती वार
जिण दिन/आदमी री हामी
नकारै मे बदळीजण लागगी
खतरो पैदा व्है जावैला
बगला री ऊचाया मै
सबदा रै जादू रो/तूटणो जारी व्हेगो
धाप्यो धूजण लागो
भूखो, भारी व्हेगो।

उडीक

थच्ची दारू रं भभकै दाई
पसर जावै झूपडी माथै दिन—
जाग जावै गळिया मे
गाळिया अर जाळिया
उणरी मजूरी माथै जावण री
वगत व्हेगो पण वो
काले रो गयोडो
हाल पाछो वावडियो कोनी।

अं ऊची इमारता/सरू कर दी
झूपडिया नं क्स-क्स'र मारणी ठोकर
बारै निकळिया पछं वो
वण जावै 'मेटाडर' के जोकर
गरीब री भूख
फाटोडी चप्पल मे चुभती
कील ज्यू
अस्टपोर वणाया राखै
अंक चुभाव
तुलसी व्हो के कवीर
पेट वजाय'र हाथ पसारतो
आयगो दरवाजै

पण वौ पाछौ नी आयौ
हाल ताई/काल रौ गयोडौ।

ससार-त्यागी
ससारिया विच्चै बैठ'र
सुणावै/अमर-वाणिया
झेर म वे टेर मे
हिलती रैवै घाटिया
ऊचै घर री मेडी माथै बोलै उल्लू
चुल्लू उण बडी नाक सारू छोटौ
आखती-पाखती री हरियाळी
कंद/ वारा कंवटसा अर मनीप्लाटा मे
हरेक काळ मे
दुख/निबळ नै खोचै
राजवी/पीळी-हुळक गगा मे
सिनान कर सीचै
खुद रौ बागीचौ
वौ है, के हेत रा चिणा वाटतौ फिरै
वै है के उणनै चिणै रै
छिलकै जित्तौ नी गिणै
खबरा रौ खुणखुणियौ हिलावतौ
आयगौ आज रौ अखबार
वौ, काल रौ गयोडौ
पाछौ बावडियौ कोनी।

उणरी कोई खबर नी छपी अखबार मे
अर नेताजी नै
उणरै (?) कल्याण री योजना सू फुरसत नी
यू इज
तूटता रैवै आदरसा रा रूगता
ऊगता रैवै रू तोड

अग अधर व्है जावै
वो है के दवा अर दुआ बिच्चै
झोला खावै।
दिलासा री अफीम चटाय'र
हींडावै राजनीती—'सोजा बाबू सोजा रे
थोडो मोटो व्हेजा रे !'
पण इण बाबू नै कदैई मोटो नी व्हेण दै
नोट अर सोट रै इसारै
वोट न्हाक'र बाबू खुद नै सरकार मान
राजी व्है जावै।
बात घर-गवाड री व्हो के देस-परदेस री
पढै-सुणै खुद नी समझै
पण दूजा नै समझावै
अबै वो पाछो आवै तो की सुणावै।

वो रोजीना काम री तलास मे जावै
तद उणनै लखावै—
जिका कनै काम है
वै करै कोनी
जिका करणो चावै
वानै मिळै कोनी।
छपियोडी व्हो के कोरियोडी
के भलाई घडियोडी
रपटबा गोळाया अर
मूडै भरीजतो पाणी
कद ताई व्है
अदीठ काणी री राणी सू खेंचाताणी
अर रोजीना अेक तस्वीर तिडकाय दै
नामचीन पैलवान
समाज रै दुरग माथै रैवै
अस्टपौर पोहरो

पण वो पाछो नी आयो
हाल ताई/काले रो गयोड़ो ।

ससार-त्यागी
ससारिया बिच्चै बैठ'र
सुणावै/अमर-वाणिया
शेर में के टेर मे
हिलती रैवै घाटिया
ऊचै घर री मेडी माथै बोलै उल्लू
चुल्लू उण बडी नाक सारू छोटो
आखती-पाखती री हरियाळी
कैद/वारा केक्टसा अर मनीप्लाटा में
हरेक काळ मे
दुख/निबळ नै खीचै
राजवी/पीळी-हुळक गगा मे
सिनान कर सीचै
खुद रो बागीचो
वो है, के हेत रा चिणा बाटतो फिरै
वै है के उणनै चिणै रै
छिलकै जित्तो नी गिणै
खबरा रो खुणखुणियो हिलावतो
आवगो आज रो अखबार
वो, काल रो गयोड़ो
पाछो बावडियो कोनी ।

उणरी कोई खबर नी छपी अखबार में
अर नेताजी नै
उणरै (?) कल्याण री योजना सू फुरसत नी
यू इज
तूटता रैवै आदरसा रा रूगता
ऊगता रैवै रू तोड

अग अधर व्हे जावै
वो है के दवा अर दुआ विच्चै
झोला खावै।
दिलासा री अफीम चटाय'र
हीडावै राजनीती—'सोजा बाबू सोजा रे
थोडो मोटो व्हेजा रे।'
पण इण बाबू नै बदेई मोटो नी व्हेण दै
नोट अर सोट रै इसारै
वोट न्हाख'र बाबू खुद नै सरकार मान
राजो व्हे जावै।
बात घर-गवाड री व्हो कै देस-परदेस री
पढै-सुणै खुद नी समझै
पण दूजा नै समझावै
अबै वो पाछो आवै तो की सुणावै।

वो रोजीना काम री तलास में जावै
तद उणनै लखावै—
जिका कनै काम है
वै करै कोनी
जिका करणो चावै
वानै मिळै कोनी।
छापियोडी व्हो के कोरियोडी
के भनाई पडियोडी
रपटवां गाळाया अर
मूडै भरोजतो पाणी
यद ताई व्है
अदीठ कामी री राणी सू खेंचाताणी
अर रोजीना अेक तस्वीर तिडकाय दै
नामचीन पैलवान
समाज रै दुरग मांयं रैवै
अग्टपोर पाहरो

किणी चाल रौ चौरतौ लखाव
मावौमाय चूटवौ करै
वोटौ व्हौ के ना व्हौ
गिडक हाडकी चूसवौ करै ।
'मीट' सवद रौ
न्यारी-न्यारी भासावा मे न्यारौ-न्यारो अरथ
मास के मिलौ के निजर के लूण
टावर नै अरथावतौ मास्टर
वगत रो भाटौ सिरकावै अर पूछै—
'कनी मे कली ?'
छोरा कुचमाद रौ काकरो वगावै
के छिपकली !
मास्टर री आम्या घडी सू अर
छोरा रा कान घटी सू चिपियोडा रैवै
बेटा रै स्कूल जावणौ वगत व्हेगो
पण बाप काले रौ गयोडौ कठै रैगो ?

वळक री कमी नी व्है
कळकी अवतार नी लै
पाप कोई घडौ कोनी के भर जावै
लोभ कोई जीव कोनी के मर जावै
समझ जावै नकली दात
कित्तौई खावौ ताव
नी घटैला बिदामा रा भाव
मुसीवता
घर-घर गळी-गळी मारै बेभाव
अ-.आव
कालै घर सू निकळि
काम घणौ वाकी
पूरौ करण वे

बाकी हिसाव

रोजीना नक्सै मे कुरियोडो नगर अेक
ऊगतै उजास समचै उठ खोलै
आपरो रोजनामचो अर
बाकी हिसाब री वसूली करण लागै ।

सूतोडो लारलो हिसाब उठ जागै

घोडै रै चाबुक जोर सू मारिया
सवारी पइसा वत्ता नी दै भाई
यू ताव नै मत पाळ
मावळ रास नै सभाळ
घोडै री नाळ उखळगी
थारी लटकगी खाल
थनै मिळी नी मिळी
घोडै नै दाणो देवणो पडैला
वोट लाटणियै सू पूछणो पडैला
कद ताई रैवैला अै हवाल
सवाल
पैतीस बरसा सू जवाब मागै है ।

रावळै रै पसवाडै हेटै दबियोडो
थारो दादो

क्यू ना लय सक्यो सायत री सास
क्यू ठाकर-सा री चिलम हमेस
बुझती उणरै मोरा माथै
कोईडा री मजबूती
क्यू उणरी हाडकिया माथै परखीजती ?
कूअै सू पाणी खीचती
पिणियारी री डोयली मे अटक'र
वा किणरी ओढणी ऊपर आयगी ही ?
जा पूछ थारा बाप नै के
किण हिसाब री भेट चढगी ही
थारी मा
खेता गयौ बडौ भाई
पाछौ क्यू नी आयौ
खेत मे लाधी दातडली माथै
वौ खून किणरौ हौ ?

किण मे / कठै / कित्तौ
बाकी रैयगौ हौ हिसाब
पाछौ काढणौ पडैला
अेक-अेक पानौ लारलौ
पाछौ पलटणौ पडैला।

कम्पोजिटर

अेक अेक आखर चुगतो
सबद दर-सबद जगै भरतो
जिंदगानी रा केई विसया नैं
मान मोल देवतो कम्पोजिटर
सीनैं माय दरदीलो तणाव उठण ताईं
लगोलग फवतो रैवैं हाथ।

'स्वास्थ्य सारू नुकसाणदाई' व्हेणैं रो
नी रैवैं कोई अरथ
वरसा मीसैं म रेळ-पेळ व्हेती
आगळिया सारू।

रगत रै पाण आखर चुगता
वाहुडो अधर व्हैजा जठै ताईं री
दौड दौडतो ओ
काई गुन्हो कियो के मिळ्या ताईं
फगत रोटी रो सरनण ल्हियो
साग सारी रैयगो।

आखर-आखर भरीजतो म्टिक'
म्टिक दर म्टिक भरीजतो 'गैली' रै
गमा में भरीज्नी निजोरी
मानिख री
छहती बूंद ताईं निचोवती हरफन

क्यू नी लेंय सक्यौ सायत री सास
क्यू ठाकर-सा री चिलम हमेस
बुझती उणरै मोरा माथै
कोईडा री मजबूती
क्यू उणरी हाडकिया माथै परखीजती ?
कूअ सू पाणी खींचती
पिणियारी री डोयली मे अटक'र'र
वा किणरी ओढणी ऊपर आयगी ही ?
जा पूछ थारा बाप नै के
किण हिसाब री भेट चढगी ही
थारी मा
खेता गयौ वडौ भाई
पाछौ क्यू नी आयौ
खेत मे लाधी दातडली माथै
वौ खून किणरौ हौ ?

किण मे / कठै / कित्तौ
बाकी रैयगौ हौ हिसाब
पाछौ काढणौ पडैला
अेक-अेक पानौ लारलौ
पाछौ पलटणौ पडैला ।

कम्पोजिटर

अेक अेक आखर चुगतौ
सबद-दर सबद जगै भरतौ
जिंदगानी रा केई विसया नै
मान-मोल देवतौ कम्पोजिटर
सीनै माथ दरदीलो तणाव उठण ताई
लगोलग फेंकतो रैवै हाथ ।

'स्वास्थ्य सारु नुकसाणदाई' व्हेणै रो
नी रैवै कोई अरथ
बरसा सोसै मे रेळपेळ व्हेती
आगळिया सारु ।

रगत रै पाण आखर चुगता
बाहुड़ो अधर व्हैजा जठै ताई रो
दौड़ दौड़तो औ
काई गुन्हौ कियौ के सिझ्या ताई
पगन पेटां रो गरजण व्हियौ
गाग बाकी रैयगी ।

आखर-आखर भगीजनो 'स्टिक'
स्टिक दर स्टिक भगीजनो 'गैली' रै
गमणै भगीजनो निजोगी
मानिच री
छेहली बूंद माई निचोयणी हुनर

लावौ दौ माचिस

लै आ माचिस अर सुण लै
के तू इणरौ की नी करैला
सिवाय इणरै
के आपरी बीडी सिळगाय लै
तूळी नै फूक देय सावळ बुझाय दै
अर पेटी म्हनै पाछी कर दैला।

लै आ माचिस
पण याद राखजै
के इणासू थनै फक्त
चूल्हौ सिळगावणौ है
राटिया पोवणौ है
काम काढ पेटी म्हनै पाछी देवणी है।

आ लै, इणसू तू स्टोव सिळगाय'र
दो चाय वणा सकै
घर-जरुत सारू
दो-चार तूळिया राख सकै
पण पेटी पाछी देवणी है, याद राखजै।

अधारौ पड़गौ है, दीया-वत्ती करलै
दो-चार तूळिया व्है तौ
पेटी तू इज राखलै

अवै तौ तू ई जाणै
थनै आरो काई करणौ है
म्हैं जावूला
म्हनै नुवी माचिस री प्रबध करणौ है।

हा, लावौ दो माचिस।
म्है विस्वास दिरावू
के म्है इणरौ की नी करूला।
बीडी मिळगाय दोय कस खचूला
अेक आप ई खेंच लीजौ
पछै सोचाला—
आपा नै काई करणी है
थारी पेटी थानै पाछी कर दूला।

लावौ दौ माचिस
चूल्हो सिळगायला
दोय टिक्कड़ पायला
अेक थै खाइजौ/अेक म्है खावूला
पछै आपा सावळ सोचाला
के अबै आपानै
काई, कीकर करणौ है।

म्है करूला अर आप देखोला
तूळी रौ उपयोग फालतू नी व्हैला
दोय कप चाय बणाय'र पीला
पछै सोच।
के काई व्हैणो चाइजै
समस्यावा रौ समाधान
माचीस मू इण वगत इत्तौ इज काम।

ठीक है के जेब मे इण वगत
पइसा कानी

तावडियँ पुस्ट व्हेय
सिक सिर नैं पाणी
टावरिया छोड भून
    इणनैं औलाद मान
अम्ट-पीर इणरी अंधेर रात जागणी।

बाट-चूट झपट-छाण
चमक रग देवणो ली देख
        इण जमी माथै।

अठै इज, इण जमी माथै
अै भुगतै वैद, वो काटै सजा
        वधव बण्योडो है
ओ है बीज
थै हो हाथ
थारी जो रंयो है बाट
        लो आवो!
अठै इज इण जमी माथै।

क्यू इत्ता नाराज

इत्ता नाराज क्यू हो बापू
    जे म्हैं नी मानी थारी बात
गयो परो
    थारै बरजता थका ई बारै
        लारै
थैं उडीकता रैया म्हारी बाट।

कुण कियो आवास इत्तौ बदरग
दिसावा
    क्य आपरी ओळख गमाय दी
    क्यू फर जमी
पाणी बदळै नोही री माग क्रै?

थैं आरा उत्तर नी देय सकौ
        परवा नीं,
म्हैं निना उत्तर नी रैय सकू।

जे म्हैं गयो परो
गरम हवा
    अर धारदार हालात साथै
        गस्त लगावतै
ग्रनरै गामो/मुकाबलै सारू/मित्रा साथै
उबेरतो सवाळा रा जवाव
    तो क्यू उदास आगणै

थँ वेराजी ओढ अबोला व्हेगा।
थँ इज कंवता
वा दिना/उण वगत/नी सुणी
किणी री थँ
अर निकळगा हा वारै
आपरी जमी/आपरै आकास री
घोसणावा करता
नरभक्सी, अधारी दिसावा रै माय
लारै—थारी वाट जोवती रैयी
घर री थळी
तूटोडी मचली नीचै, फाटोडी जूत्या
अेकानी उदास पड्यौ
टावर रौ गाडूल्यौ
तद सुणी कोई री थँ
मानी किणी री ?

फौलाद सू वत्तौ मजबूत व्है आदमी
दावानळ सू वत्ती तेज व्है, अतस री लाय
थँ साबित करी
भोटा पडगा दमन रा तमाम हथियार
था लोगा सू टकरीज'र
पाछा पडण लागा हा, साही घोडा रा पग
थारी अगन-झळ मे अपडीज'र
घनरौ उण वगत ई कम नी हौ
सूखगी ही कटोरदान मायली रोटी
दुखियारण रसोई मे सोयगी ही
थानै देवण सारू झरूटिया मडाय'र ई
दोय पाका बोर लियोडौ
सोयगौ हौ म्है/थारी वाट उडीकतौ
दादोसा री मारग मुखी आखिया
नी झपकी ही सारी रात।
हाल ई/भर-सरदी देखू थानै टसकता
उण रात जिण विध थँ झेल लिया वार

पसवाड़ा फेरण लागै वा जूनी मार
उण वगत थैं
सगळा रिस्ता झाड-झटक
गया परा वेलिया रै लार।

पच्छै, इत्ता नाराज क्यू हौ वापू
जे म्है नी मान थारी वात
म्हाणी वात/म्हाणी जमी/म्हाणै आकास सारू
देखौ वापू
इण वदरंग व्हियोड़ै थारै आकास सारू
गयौ परौ काटीज्योड़ै फौलाद रा
छिलका उतारण
लैय रदौ
वणा टोळौ
गुण-अवगुण थारा की पालतौ
रैवू म्है चालतौ
धरौ
धरौ म्हारै मौर थारौ हाथ
वापू, इणमें नाराजगी री किसी वात।

आखती-पाखती रा रंग

टायरिया सीखै भासा रो भूड
दुरगधी वायरियै लेवै सास
रम्मै रग-रग मे रोगी रागणो
किणनै देवोला इणरो दोस
किणनै काढोला थारी गाळिया
उठा सको तो उठावो थै
खुद रै कानी इज खुद री आगळी ।

काची ऊमर यू पाको रोग
दवाया करै नी कोई कार
बोलो,
की तौ बोलो, चुप क्यू हो आज
क्यू कोनी ऊची व्है थारी नाड
पोथी मे दबियोडो ग्यान
व्हेगो, था सारू सजावट रो सामान ।

सम्बधा पडगी अेक कुवाण
पीळै चिलकै रै चकारचा देता जाय
बिन हळदी चढिया जावै रग
देही सू सोरो नी पाछो ऊनरै
अबै धुपसी नी किणी सिनान
अै देही दागीज्या पाका दाग
किणी झपाटै जळ नै फेक दो

नी बूझसी मिनखा जगळ आग ।
वरसा सूखोड़ा खखड़ चेतिया
आला-लीला ई भेळा वाळसी
आवं है, आवं है देखौ लाय ।

राम-नाम रै माथै थारौ साच
फकत
अरथी माथै उचरीजं अवं हमेस
आक-आक नं नफा-निजर सू वाच
वौपारा आवण नी देवौ आंच
वगत-वगत में
मिनख मिनख रौ
न्यारौ-न्यारौ मोल-तोलकर
थारी आ दौलत री घट्टी
अेक-अेक ऊंचाया पीसं
परवत ई दीसं तौ
सीस झुकाया दीसं ।

सिक्कौ,
झुका सकै थारौ सीस
थैं परवत रौ नीं
वौ तौ धरती सू इज जुड़ेला अर
आकास नै इज निवंला ।

सिक्कं नं यू मत उछाळौ के
चमक तौ दीसं अर
सिक्कौ गायब व्है जावं
आदमी, आदमी सू फकत
फंसण वण जावं ।

थारौ सगळौ खेल कागदी
कागद रद्दी वण विक जावं
थैं खुद नं ई वेच सकौ हौ

जुड़ाव /

जे थारा पड्गा वट जावै ।
जगळ लागी लाय, झपाटा देनी आवै
अठीनै तेवडिया वैठा म्हा—
अनवी सगळी रद्‌दी नै वाळणी
वचा सको तो वचावो थँ
खुद नै रद्दी वणणं सू आज ।

आग री ओळख

आग फक्त वा इज तो नी व्है
जिकी निजर आया करै
झळझळाट करती अगन
दीखै कोनी
        पण रेत माथै बिछ जाया करै
        पग धरा तो सिक जाया करै

आग रै उपयोग सूं पैली
उणरी ओळख जरूरी
काम काढण सारू वा
            पूरी है के अधूरी
ओ जाणणो जरूरी ।

वगत पड़िया आग
            उपजावणी पड़ै
नी व्है तो अठी-उठी सू लावणी पड़ै
ठंड रै भाखर हेटै
            दब'र मरण सू पली
आग उपजाय
ठंड नै पिघळावणी पड़ै ।

जठै
निजर आवै आख म ललाई

नस-नस चैरै माथै तणियोडी
भीच्योडी मूठिया
फणाफणावता फुणिया
अर सास-गनी वधियोडी
समझलो, उण जगै आग सिळगगी है।

कैवै
के राग सू ई आग उपजती ही
सबदा सू परगटती
अगनी नै देखी हा
झेली हा,
वरससा सू पोख्योडी अगनी नै
दवियोडी आ अगनी
काढणी थनै है
जाग आग लागगी
वुझावणी थनै है
वुझगी जे सोचलै
लगावणी थनै है
सोचलै के आग नै पिछाणणी थनै है

कित्ती अजीव वात है
लोग
हथेळी माथै हीरै ज्यू आग धर
उणरो सोदो कर लिया करै
आग नै
लाग ज्यू काम लेय
आपरो वगत काटण सारू
पीढिया री गरमी नै
गिरवी धर दिया करै।

पचता-खपता ई
नी लाधै थानै जे
कठई कोई चिणग दवियोडी

कीकर वा पंदा व्है ?
सोच-समझ वा समझ
समझावणी थनै है ।

पण सैंगा पंली तूं
अगनी सू ओळखाण कर लीजै ।

कीं नैनी कवितावां

1

औ नवसौ है
अै ऐसिया अर अफ्रीका
आगळी धरू
अर खून मे भरीज जावै ।
अैडी वगत ठा पडै
के खोटै वगत मे
खरौ पाडोसी कित्तौ काम आवै
मिळ'र छूटजा
तौ घणौ याद आवै

2

उणनै हमेस रंयौ
रेत अर खेत सू हेत
उण कंयौ
रेत
नी रैवण दै खुद माथै कोई दाग
खेत-रेत नै फळवती करै।

3

कुल्हाड़ै री धार रै खिलाफ
बगावत रौ निरणै
दरखत री मायाया

गूथ गूथ गाठा नै
वधती री छाटा मे
धीरैं धीरैं धार भोटी व्ही
मार पडी मोळी
रुख रुख बाथ धाळ
जगळ झूमण लागो
आवती अवाज—
देख म्हाणा ठाट भाई
आव म्हानै काट भाई।

4

घर सू अस्पताळ ताई रो रस्तो
पार कियो जा सकै
अस्पताळ सू दवाया री दुकान बिच्चै
वध जावै आतरो।

5

अठीनै म्हैं
भीत मायै उणरी तस्वीर टाकता
अगूठ मायै चेप दी हथोडी
उठी नै
उण रै रसोई म
म्हारी सिसकारी सुण
चैंटगौ तवौ।